मंगल ग्रह की पौराणिक कथा

हिन्दू पौराणिक शास्त्रों में चार युगों सतयुग (17,28,000 वर्ष), त्रेतायुग (12,96,000 वर्ष), द्वापरयुग (8,64,000 वर्ष) और कलयुग (4,32,000 वर्ष) का वर्णन अनेकों बार आता है। चारों युगों का योग एक महायुग (43,20,000 वर्ष) कहलाता है और जब एक हजार बार महायुग निकाल जायें तो एक कल्प (4,320,000,000 वर्ष) बनता है, जिसे ब्रह्मा जी का एक दिन कहते हैं। इनमें सतयुग की कथा में वैकुण्ठ के जय और विजय नामक दो द्वारपाल सनकादियों के शाप से हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यपु बनें। जिसे क्रमानुसार लोभ और काम की संज्ञा दी गई। लोभ चाहता है कि विश्व की समस्त सम्पत्ति मुझे प्राप्त हो इसलिए हिरण्याक्ष पृथ्वी को चुराकर अनन्त समुद्र के अन्दर ले गया। इस चोरी की घटना का पता जब भगवान विष्णु को लगा तो उन्होंने पृथ्वी के उद्धार के लिए वराह रूप में अवतार लिया और हिरण्याक्ष को रोका और उसके साथ एक भयंकर युद्ध किया, जिसमें हिरण्याक्ष मारा गया और वराह भगवान ने पृथ्वी को यथा स्थान स्थापित कर दिया। उस समय वराह भगवान के शरीर से एक दिव्य तेज निकल रहा था, जिससे प्रभावित होकर पृथ्वी ने उन्हें पति रूप में चाहा, पृथ्वी की इस इच्छा को पूरी करने के लिए उन्होंने एक सुन्दर और मनोरम रूप धारण किया और पृथ्वी के साथ एक दिव्य वर्ष तक रहे जिससे मंगल का जन्म हुआ, इसलिए मंगल को भूमि पुत्र या भूमि सुत भी कहते हैं। कल्पान्तर के अंतरगत एक अन्य कथा में जब प्रजापति दक्ष की पुत्री सती ने दक्ष के यज्ञ में ही अपने प्राण त्याग दिये, जिससे क्रोधित होकर भगवान शंकर ने अपनी जटा के एक बाल के दो हिस्से करके भद्रकाली तथा वीरभद्र को प्रकट किया, जिन्होंने दक्ष प्रजापति सहित उनके यज्ञ का नाश कर दिया, उसके बाद भगवान शंकर सती की याद में बहुत विकल हो गए, इस चित विकलता से निकलने के लिए भगवान शंकर घनघोर तपस्या में लीन हो गए, जिससे उनके शरीर से एक पसीने की बूंद निकली और पृथ्वी पर आ गिरी, उस बूंद को पृथ्वी ने अपने गर्भ में धारण कर लिया और आगे चलकर पृथ्वी ने एक दिव्य बालक को जन्म दिया जिसका नाम मंगल रखा गया।

मंगल ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

मंगल के जन्म को लेकर पुराणों में अनेकों कथाएं मिलती हैं, पर सभी कथाओं में मंगल की माता को भूमि या पृथ्वी ही बताया गया है, इस कारण जन्मपत्रिका में मंगल की अवस्था को देखकर अचल संपत्ति का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। जन्म पत्रिका में मंगल ग्रह का निर्बल और पीड़ित होना दर्शाता है कि अचल सम्पत्ति बनाने या बनाये रखनें में अनेकों अड़चनों का सामना करना पड़ता है, जबकि जन्म पत्रिका में मंगल ग्रह का बलशाली और शुभ ग्रहों से दृष्ट आदि होना दर्शाता है कि आप अपने बल पर अचल सम्पत्ति बनायेंगे और पैतृक अचल संपत्ति का भोग और विस्तार भी करेंगें। मंगल पुरूष ग्रह होने के कारण सन्तान पक्ष को भी बलशाली बनाता है, विशेषतौर पर पुत्र जन्म को लेकर, साथ ही स्त्री का पुरूष की ओर आकर्षण का कारण मंगल ग्रह ही है।

मंगल स्वभाव से क्रूर और पापी है और अशुभ माना जाता है। मंगल एक दिन में लगभग 29 मिनट (angle वाले मिनट) से लेकर 46 मिनट (angle वाले मिनट) तक चलता है। एक राशि में लगभग 45 दिन तक रहता है। मंगल शक्ति और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। जन्म पत्रिका में मंगल ग्रह से ही पता चलेगा की आपके जीवन में कितना मंगल है और कितना अमंगल। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में मंगल एक जिद्दी ग्रह है, बलपूर्वक अपनी बात को मनवानें वाला ग्रह है, और साहस से भरा हुआ और निर्णय लेने की क्षमता इसी ग्रह में सबसे अधिक होती है। यदि बृहस्पति के आशीर्वाद (स्पर्श) से निर्णय सही वक्त और सही दिशा में हो जाए, तो जीवन में मंगल ही मंगल है और यदि शनि का स्पर्श हो जाए तो अमंगल ही अमंगल है। विवाह संस्कार में भी मंगल की अपनी ही एक अलग भूमिका है। कुण्डली के कुछ विशेष स्थानों में बैठकर जातक को मंगली बना देता है और पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन को पूरी तरह से प्रभावित करता है।

मंगल ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	बल, साहस, उर्जा
2	संबंध	भाई (बड़े/छोटे)
3	स्वभाव	क्रूर, पापी, जिद्दी
4	गोत्र	भारद्वाज
5	दिन	मंगलवार
6	वाहन	मेष (भेड़ा)
7	रंग	लाल (ताम्र)
8	दिशा	दक्षिण (South)
9	गुण (प्रकृति)	तमोगुणी
10	लिंग	पुरूष
11	वर्ण (जाति)	क्षत्रिय
12	तत्व	अग्नि
13	स्वाद	तीखा, कड़वा या नीम की तरह
14	धातु	पीतल, तांबा, सोना
15	ऋतु	ग्रीष्म
16	दृष्टि विशेष	4,7,8 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	अरहर
18	शारीरिक अंग	मज्जा
19	अन्न दान	मल्का (मसूर), गुड़
20	द्रव्य दान	घी
21	विंशोत्तरी महादशा	7 वर्ष
22	जप संख्या	10,000
23	रत्न	लाल मूंगा, (संस्कृत में अंगारक मणि)
24	उपरत्न	संगमूंगी, विद्रुममणि
25	सहचरी	शक्तिदेवी / ब्रह्मचारी
26	चरादि	चर

27	समिधा	खदिर (खैर) या कत्था
28	मंगल के मित्र ग्रह	सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति, केतु
29	मंगल के सम ग्रह	शुक्र, शनि
30	मंगल के शत्रु	बुध, राहु
31	उच्च राशि	मकर (0° से 28° तक)
32	नीच राशि	कर्क (0° से 28° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	मेष (0° से 12° तक)
34	स्वग्रही राशि	मेष (13° से 30° तक)
35	राशि स्वामी	मेष, वृश्चिक
36	नक्षत्र स्वामी	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
37	मंगल के आधी देवता	पृथ्वी
38	मंगल के प्रत्यधि देवता	स्कन्द (स्वामी कार्तिकेय)
39	मंगल ग्रह का कद	ह्रस्व (छोटा)
40	मंगल ग्रह शुष्काादि में	शुष्क ग्रह